PGCBHT

बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम
(पी.जी.सी.बी.एच.टी.)

सत्रीय कार्य
2020

(जनवरी 2020 और जुलाई 2020 सत्रों में
प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

अनुवाद अध्ययन और प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम
(पी.जी.सी.बी.एच.टी.)
सत्रीय कार्य 2020

(जनवरी 2020 और जुलाई 2020 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.बी.एच.टी.

प्रिय विद्यार्थियो,

जैसा कि 'बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम' (पी.सी.बी.एच.टी.) की 'कार्यक्रम दर्शिका' में आपको बताया गया है कि इस अध्ययन कार्यक्रम में पढ़ाई के साथ–साथ आपको कुछ सत्रीय कार्य भी करने हैं। चार पाठ्यक्रमों वाले इस कार्यक्रम के तीन पाठ्यक्रमों के अंतर्गत आपको एक–एक सत्रीय कार्य करना होगा और चौथा पाठ्यक्रम 'अनुवाद परियोजना' से संबंधित है। सत्रीय कार्य आपकी आंतरिक परीक्षा है। अतः इन्हें ध्यानपूर्वक और पूरे परिश्रम के साथ करें। प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। प्रत्येक पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य आप अपनी सुविधा के अनुसार अलग–अलग प्रस्तुत कर सकते हैं और एक साथ भी प्रस्तुत कर सकते हैं! सत्रीय कार्य प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि इस प्रकार है :

पाठ्यक्रम कोड एवं शीर्षक	प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि	
	जनवरी 2020 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए	जुलाई 2020 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए
एम.टी.टी.–001 भारतीय भाषाओं में अनुवाद	31.03.2020	30.09.2020
एम.टी.टी.-002 बांग्ला–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन	31.03.2020	30.09.2020
एम.टी.टी.–003 बांग्ला–हिंदी के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद	31.03.2020	30.09.2020

उद्देश्य : प्रस्तुत कार्यक्रम के अंतर्गत आपको भारतीय भाषाओं में अनुवाद, बांग्ला–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन के साथ–साथ इन भाषाओं के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद का अभ्यास कराया गया है। सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और उसे कहाँ तक व्यवहार में ला सकते हैं। यानी आपको इस योग्य बनाना है कि अध्ययन के दौरान जो जानकारी आपको प्राप्त हुई है उसे अपने शब्दों में विधिवत प्रस्तुत कर सकें और अनुवाद कार्य में उसे व्यवहार में लाते हुए अच्छा अनुवाद कर सकें।

सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें

1) उत्तर के लिए फुलस्केप कागज का ही इस्तेमाल करें।

2) प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए अलग उत्तर–पुस्तिका बनाएँ। इस तरह आपके तीन सत्रीय कार्यों के लिए तीन उत्तर–पुस्तिकाएँ होनी चाहिए।

3) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के दाहिने कोने के सबसे ऊपर अपना नामांकन संख्या, पूरा पता लिखें तथा तिथि सहित हस्ताक्षर करें।

4) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के बाएँ कोने पर कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम का कोड, उसका शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड तथा अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखें।

आपका सत्रीय कार्य इस प्रकार आरंभ होना चाहिए :

कार्यक्रम का शीर्षक :	नामांकन संख्या : .... नाम : .... पता : ....
पाठ्यक्रम कोड :.. पाठ्यक्रम का शीर्षक : .... सत्रीय कार्य कोड : .... अध्ययन केंद्र का नामः	हस्ताक्षर :.. तिथि : ....

---

5) पाठ्यक्रम के कोड तथा सत्रीय कार्य के कोड सत्रीय कार्य पर मुद्रित होते हैं और वहाँ से देखकर लिखे जा सकते हैं। प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

6) अपने उत्तर केवल फुलस्केप कागज पर लिखें और उन्हें अच्छी तरह नत्थी कर दें। बहुत पतले कागज पर न लिखें। बायीं ओर 4 से.मी. का हाशिया छोड़ दें। एक उत्तर और दूसरे उत्तर के बीच कम से कम 4 पंक्तियों का स्थान छोड़ें। ऐसा करने से परीक्षक उचित स्थान पर अपनी टिप्पणी दे पाएँगे।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

- सत्रीय कार्य में दिए गए निर्देशों के अनुसार उत्तर लिखिए। व्यावहारिक प्रश्नों के उत्तर समुचित कोश का उपयोग करते हुए प्रसंग और संदर्भानुसार देने हैं।
- प्रत्येक सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़ें और उसमें यदि कोई विशेष निर्देश दिए गए हों तो उनका पालन करें। सत्रीय कार्य जिन इकाइयों पर आधारित हैं, उन्हें पढ़ लें। प्रश्न के संबंध में महत्वपूर्ण बातों को नोट कर लें, फिर उनको व्यवस्थित करके अपने उत्तर की रूपरेखा बनाएँ।
- जब आपको विश्वास हो जाए कि जो उत्तर आप देने जा रहे हैं संतोषजनक हैं, तब उन्हें साफ–साफ लिखें और जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दें।
- अनुवाद के व्यावहारिक प्रश्नों को करते समय 'कोश' का भरपूर प्रयोग करें। विषय एवं संदर्भ का विशेष ध्यान रखें। बांग्ला और हिंदी के कथनों की तुलना करें। यह देखें कि अनुवाद से वही अर्थ निकल रहा है जो मूल सामग्री से निकलता है। यह भी सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद लक्ष्य भाषा की उपयुक्त शैली के अनुरूप है, स्रोत भाषा की छाया मात्र नहीं। अनुवाद में मूल लेखन की–सी सहजता लाने के लिए अपनी कल्पनाशीलता और लेखन–क्षमता का उपयोग करें।
- निबंधात्मक प्रश्नों का उत्तर देते समय प्रस्तावना और निष्कर्ष के संबंध में विशेष ध्यान दें। प्रस्तावना संक्षेप में होनी चाहिए। इसमें यह बताएँ कि प्रश्न से आप क्या समझते हैं और आप क्या लिखने जा रहे हैं। निष्कर्ष में आपके उत्तर का सार होना चाहिए। उत्तर सुसंगत और सुसंबद्ध हों। वाक्यों और अनुच्छेदों में परस्पर तालमेल होना चाहिए। उत्तर सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्न से संबद्ध होना चाहिए। यह देख लें कि आपने प्रश्न में निहित सभी मुख्य बातों के उत्तर शामिल किए हैं।

सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपके उत्तर तार्किक और सुसंगत हों।

ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो।

ग) उत्तर सही ढंग से लिखे गए हों तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति उत्तर के पूर्णतया अनुकूल हो।

घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबे न हों।

ड) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

च) उत्तर अपने हाथ से लिखें। इसे मुद्रित या टाइप न करें। अपने उत्तर को विश्वविद्यालय द्वारा आपके पास भेजी गई इकाइयों से नकल न करें। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको कम अंक मिलेंगे।

छ) अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों से नकल न करें, यदि यह पाया जाता है कि आपने नकल की है तो आपके सत्रीय कार्यों को अस्वीकृत कर दिया जाएगा।

ज) प्रत्येक सत्रीय कार्य को अलग–अलग लिखें।

झ) प्रत्येक उत्तर के साथ उसके प्रश्न की संख्या लिखें।

ञ) सत्रीय कार्य को पूरा करके इसे अध्ययन केंद्र के पास भेज दें। अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य की उत्तर–पुस्तिका को किसी भी स्थिति में **मुख्यालय के विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग को मूल्यांकन के लिए न भेजें।**

ट) अध्ययन केंद्र में सत्रीय कार्य को प्रस्तुत करते समय निर्धारित प्रेषण एवं पावती कार्ड पर अध्ययन केंद्र से (सत्रीय कार्य प्राप्त किए) प्राप्ति दर्ज करा लें।

ठ) यदि आपने क्षेत्र को बदलने के संबंध में निवेदन किया है तो आप अपने सत्रीय कार्यों को अपने पहले के अध्ययन केंद्र में ही तब तक भेजते रहें जब तक विश्वविद्यालय की ओर से आपको क्षेत्रीय केंद्र बदलने की सूचना नहीं भेज दी जाती।

शुभकामनाओं के साथ,

भारतीय भाषाओं में अनुवाद (एम.टी.टी. 001)
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.बी.एच.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी. 001
सत्रीय कार्य कोड : एम.टी.टी. 001/ए.एस.ए.टी/
(टी.एम.ए.)/2020

पूर्णांक—100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। लगभग 300 शब्दों में उत्तर दीजिए।

11. अनुवाद में स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा से आप क्या समझते हैं? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। 10

12. ध्वनि और वर्ण का परिचय देते हुए भारतीय भाषाओं की वर्णमालाओं की चर्चा कीजिए। 10

13. भारत के भाषाई परिदृश्य पर एक निबंध लिखिए। 10

14. संस्कृति की दृष्टि से भारतीय भाषाओं की अनेकता में किस तरह की एकता मौजूद है? 10

15. बहुभाषी समाज में अनुवाद की आवश्यकता और महत्व पर प्रकाश डालिए। 10

16. भारत की विभिन्न भाषाओं के बीच शब्दावली संबंधी समानता का परिचय दीजिए। 10

17. अनुवाद के साधन—उपकरण से आप क्या समझते हैं? इनका उपयोग किस तरह किया जाता है? 10

18. विभिन्न भारतीय भाषाओं में लिखित साहित्य को भारतीय साहित्य किस आधार पर कहा जा सकता है, तर्क सहित उत्तर दीजिए। 10

19. बहुभाषिकता का अर्थ स्पष्ट करते हुए भारतीय समाज की बहुभाषिकता की विशिष्टता बताइए। 10

20. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : 10
    (क) आशु अनुवाद
    (ख) कंप्यूटर अनुवाद

MTT-002

बांग्ला-हिंदी अनुवादः तुलना और पुनर्सृजन (एमटीटी-002)

कार्यक्रम कोडः पीजीसीबीएचटी

पाठ्यक्रम कोड एमटीटी-002

पूर्णांकः 100

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **10 X2=20**

1- बांग्ला और हिंदी के बीच अनुवाद की परंपरा पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

अथवा

बांग्ला और हिंदी भाषा में शब्द रचना के स्तर पर समानता और असमानता का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए।

2- तकनीकी सामग्री का अनुवाद किस प्रकार साहित्यिक सामग्री के अनुवाद से भिन्न होता है। तकनीकी सामग्री का अनुवाद करते समय किस प्रकार की सावधानियां बरतने की जरुरत होती है?

3- **निम्नलिखित बांग्ला शब्दों के हिंदी पर्याय लिखें-** **10**

সবাই	আছড়ে	জন্য	রক্তস্রোত	থমকে দাঁড়ায়
আপনাদের	অশথ	সুযোগ	সবাইকে	সেদিক
বয়ঃসন্ধি	ঠিকানা	তৈরি	শোভনা	ওদের
জিজ্ঞেস	বোঝা যায়	শিখলে	দেখলাম	পছন্দ

4- **निम्नलिखित हिंदी शब्दों के बांग्ला पर्याय लिखें-** **10**

पहले	आधा	विकास	किसान	मजदूर
समझना	थकान	कभी भी	मित्र	गृहस्थी
कितना	दादी	बात	जिज्ञासा	बीच में
कमजोर	दोबारा	अलग	बचपन	शिकायत

5- **निम्नलिखित बांग्ला वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए।** **10**

(a) সে প্রশ্ন আমাকে করবেন না।

(b) তিনি বহুদিন আগেই ওদের ছেড়েছুড়ে অন্য সংসার বানিয়ে নিয়েছেন।

(c) কে জানে বাবা! আমি অত জটিলতা বুঝি না।

(d) আই শোন, ওই লাল শার্টের ছেলেটা তোদের ক্লাসে পড়ে?

(e) আমি ওর চোখের দিকে তাকিয়েই বুঝলাম।

(f) আপনি একটু বলে দিলে ভাল হয় না?

(g) কয়েকদিন পরেই সপ্তর্ষি মনোরঞ্জনকে সন্ধে আনাইল।

(h) আমার কাছে গল্প মানে সেখান থেকে কিছু একটা পাব।

(i) স্মরণ করিয়া সে কাজ শুরু করিল ও বিস্তর বানান ভুল করিয়া একটি প্রুফ জমা দিল।

(j) ক্রমে সে অনুভব করিল, অন্যের প্রবন্ধের প্রুফ দেখিতে তাহার মোটে ভাল লাগিতেছে না।

6- **निम्नलिखित हिंदी वाक्यों का बांग्ला में अनुवाद कीजिए।** 10

(क) यह पृथ्वी हमें अपने पूर्वजों से विरासत में मिली है।

(ख) इस धरती के पास सभी के पोषण के लायक भरपूर संपदा है।

(ग) आजकल मध्यवर्ग को भी हवाई यात्रा की सुविधाएं प्राप्त हैं।

(घ) ज्यादातर रेल गाड़ियों में खानपान की सुविधा है।

(च) शहरों में बढ़ते वायु प्रदूषण की वजह से बच्चों को सांस संबंधी बीमारियां हो रही हैं।

(छ) परीक्षा की चिंता के कारण इन दिनों ठीक से भूख भी नहीं लगती।

(ज) जैसे-जैसे गांव नजदीक आ रहा था, उसकी धड़कनें बढ़ने लगी थीं।

(झ) बहुत दिनों से उसे अपने माता-पिता का समाचार नहीं मिला था।

(ट) सामने ही एक होटल है, चलो कुछ खा लेते हैं।

(ठ) लगभग सभी बंगाली घूमने-फिरने के शौकीन होते हैं।

7- **निम्नलिखित बांग्ला गद्यांशों का हिंदी में अनुवाद कीजिए।** 10 x3=30

(a) আসলে একটা পাহাড়, ডলফিনের নাকের মতো দেখতে, তাই ওরকম নাম। তাছাড়া বছরের একটি নির্দিষ্ট সময়ে ঝাঁক-ঝাঁক ডলফিন পাহাড় দেখতে আসে। হাজার বছর ধরে মাঝসমুদ্রে দূর বন্দর থেকে আসা কোনও জাহাজ যদি পথ হারিয়ে ফেলে, ওরা তাদের পথ দেখিয়ে নিয়ে আসে এই পাহাড়ের দিকে। পাহাড়ের মাথায় ৭০০ বছরের পুরনো সাগরমাতার মন্দির আর ইশক মদিনা দরগায় সেই সব পথভ্রষ্ট নাবিকরা পুজো দেয়। বাকি যাত্রাপথটুকু যেন সফল ও শুভ হয়। তখন তো ওখানে কোনও লাইটহাউসও ছিল না।

১৮৬০ সালে গোড়ে পরিবারের সদস্যরা প্রথম একটি লাইটহাউস নির্মাণ করেন। কিন্তু ১৮৭৪ সালের এক বিধ্বংসী সাইক্লোনে সেটি অনেকটাই গুঁড়িয়ে যায়। পরিত্যক্ত লাইটহাউসটির ধ্বংসস্তূপ এখনও অবশিষ্ট আছে। ডলফিনদের প্রতি সম্মান জানিয়ে ১৯৬০ সালে ভারতীয় নৌবিভাগ পাহাড়ের মাথায় আর-একটি নতুন লাইটহাউস বানায় যেখানে আধুনিক সাইক্লোন ট্র্যাকিং প্রযুক্তির ব্যবহার করা হয়েছে। ২০১৪ সালের হুদহুদ সাইক্লোন নাকি আরও ভয়ংকর ক্ষয়ক্ষতি করতে পারত, যদি না লাইটহাউস আগাম সতর্কবার্তা দিত। আর ২০০৬ সালের সুনামি তো দক্ষিণের এই শহরে কোনও ক্ষতিই করেনি, কারণ ডলফিন পাহাড় সমস্ত ঝড়ঝঞ্ঝা থেকে শহরকে রক্ষা করেছে। ডলফিনের স্বভাব চরিত্রের সঙ্গে পাহাড়টির কী আশ্চর্য মিল!

মাঝে ১৮০১ সাল নাগাদ ক্যাপ্টেন টমাস ব্ল্যাকমোর ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানির কাছ থেকে ৪৪

একর জমি কিনে এখানে একটি বিশাল বাড়ি বানাল। তখন লোকে একে বলত ব্ল্যাকমোর পাহাড়। কিন্তু নামে কী যায় আসে? জোর করে তো আর ইতিহাস বদলানো যায় না, যায়ওনি। ব্ল্যাকমোরের বাড়িটিও আর নেই, না পাহাড়টির সঙ্গে জড়িয়ে আছে তাঁর নাম। এখন লোকে এটিকে সেই ডলফিন পাহাড় নামেই চেনে।

ইতিহাস খুঁড়তে খুঁড়তে লাইটহাউসের মাথায় যখন চড়লাম তখন পড়ন্ত বিকেল। নীচে, অনেক নীচে, ইয়ারাড়া বিচ। সবজে নীল জল আছড়ে পড়ছে সোনালি তটে। মাঝে মধ্যে ছোট ছোট টিলা। ওগুলো প্রবালের দ্বীপ। বাঁদিকে বন্দর, ভাইজাগ শহর। একশো আশি ডিগ্রি সমুদ্র। ছোট ছোট লঞ্চ জল কেটে এগিয়ে চলেছে, পেছনে জলে তার যাত্রাপথের সাদা ফেনা-চিহ্ন। ধাতব শরীর পড়ন্ত সূর্যের আলোয় চকচক করছে। কোথাও কোনও শব্দ নেই, না কোনও কোলাহল। শুধু হাওয়া সোঁ সোঁ শব্দে গুমরে উঠছে। এর মধ্যে কতকগুলো সিগাল চিৎকার করতে করতে নীচের দিকে উড়ে গেল। ডলফিনের ঝাঁক এল নাকি?

পাহাড় থেকে যখন নামছি, ডানদিকে নীচে ঘুমন্ত মেছোদের শহর তখন জেগে উঠেছে। লক্ষ লক্ষ জোনাকির মতো আলো ছড়িয়ে পড়ছে। বন্দরের জেটিতে সারি সারি চুমকি। শয়ে শয়ে লঞ্চের আলো জলে ইতিউতি ঘোরাঘুরি করছে। গুনগুন বলল, দাঁড়াও একটা ছবি তুলে নিই। জমাট অন্ধকারে আমাদের ক্যাব পাহাড় ঘেঁষে দাঁড়িয়ে পড়ল।

(b) ঝড় আসছে, সামান তুলে নে রে পাতুয়া! আজ আর মেলা হবে না। ফলের টুকরি গোছাতে-গোছাতে আকবর আলি পাতুয়াকে তাড়া লাগাল। কিন্তু আজ তো যাত্রা পালা আছে চাচা, মহুয়ার নাচ আছে। অনেক লোক হবে। তুমি দেখবে না?

আরে ওসব আজ আর হবে না রে পাতুয়া—খবরে বলেছে, জোর বারিশ আসছে, ঝড় বইবে ইদিকে, সাইক্লোন। তুই জলদি সামান তুলে বাড়ি যা।

দুপুর গড়িয়ে বিকেল হয়েছে। দোকানিরা মেলায় সবে দোকান সাজাতে শুরু করেছে। রহিম মোল্লার ঘাগরার দোকান। লাল মসলিনের ওপর নীল-হলুদ সুতোয় ফুল, প্রজাপতি। কমলার ওপর সবুজ-হলুদের পাখি। আরও নানা রঙের ছোট মেয়েদের ঘাগরা। পুঁতির মালা, কানের দুল সাজাচ্ছে মানিক তার দোকানে। টিয়া পাখির খাঁচায় দোলা দিচ্ছে সোনাই। মেলা শুরু হলেই লোক জড়ো হবে। তখন সোনাইয়ের টিয়া কার্ড তুলে-তুলে ভাগ্য বাতলে দেবে সবার। বাঁশিওয়ালা ফুঁ দিচ্ছে তার বাঁশিতে। গোলাপি, সাদা বেলুন নিয়ে হাজির বেলুনওয়ালা। করিমের দোকানে লোহার কড়াইতে জিলিপি ভাজার তেল গরম হচ্ছে। এমন সময় আকবর আলির কথায় সব যেন থমকে যায়— তবে আজ আর বিক্রি-বাটা হবে না! মেলার এই কটা দিনই তো একটু বেশি রোজগার হয় ওদের। সংসারে দুটো পয়সা বেশি আসে। ছেলে-মেয়েরা আনন্দ করে। বছরের বাকি দিনগুলো তো সেই আনার দিন আনা, দিন খাওয়া। কেউ ধান জমিতে লাঙল দেয়, কেউ বা মিস্ত্রিরির কাজ করে।

মাইকে ঘোষণা হল—সাইক্লোন আসছে। দোকান তুলে নাও।

তাঁবুর বাইরে বসে হাঁটুতে মুখ গুঁজে মহুয়া কাঁদছে। তার পরনে নীল চোলি আর ঘাগরা। মুখে চড়া রঙ। মহুয়ার বুড়ো বাপ তখন যাত্রার ম্যানেজারের কাছে হাতজোড় করে পয়সা ভিক্ষা চাইছে —"এত দূর থেকে এলাম বাবু, কয়েকটা টাকা দেন, বাড়িতে বড় অভাব।"

ম্যানেজার খেঁকিয়ে ওঠে— "পয়সা কিসের? একটাও টিকিট বেচতে পারলাম না আর উনি পয়সার স্বপ্ন দেখছেন। যদি আবার মেলা বসে, মেয়েকে নিয়ে এসো, যাত্রায় নাচবে, পয়সাও পাবে।"

মহুয়ার কানে তার বাবা আর ম্যানেজারের কথা ভেসে আসে। এক সপ্তাহ ধরে মায়ের জ্বর। ডাক্তারবাবু শহরে নিয়ে যেতে বলেছে। ছোট বোন টিয়াকে মায়ের কাছে রেখে সে আর তার বাবা পাশের গ্রাম থেকে অনেক পথ হেঁটে এসেছে। সারাদিন কিছু পেটে পড়েনি তার। খিদেয় পেট ব্যথা করছে।

পাতুয়া মাটির পুতুলগুলো টুকরিতে গুছিয়ে বাড়ির দিকে হাঁটা লাগায়। আকাশ কালো করে আছে। হাওয়া বইছে।

—"আমার খুব খিদে পেয়েছে বাবা।"

মহুয়ার কথায় বুড়ো কালু হালদার ফুঁসে ওঠে— "হারামজাদি! এক পয়সা রোজগার হল না! তোর খিদে পেয়েছে? এমন ভাঙা কপাল নিয়ে জন্মেছিস যে, রোজগারের দিনেই ঝড় নিয়ে এলি! চুপ করে এইখানে বসে থাক, আমি আর-একবার ম্যানেজার বাবুর সাথে কথা বলে আসি।"

পাশ দিয়ে যেতে-যেতে থমকে দাঁড়ায় পাতুয়া— "আমার কাছে বাতাসা আছে। খাবে?"

কোনও জবাব না দিয়ে পাতুয়ার দিকে তাকিয়ে থাকে মহুয়া।

"তুমি বুঝি ওই যাত্রাদলের?"

"হ্যাঁ, নাচ করতে এসেছিলাম দলে।" বাতাসায় কামড় দিয়ে মহুয়ার মুখ জুড়িয়ে যায়।

"তুমিই মহুয়া?" ছিপছিপে চেহারার সদ্য-কিশোরী মেয়েটার দিকে তাকিয়ে শরীরে রক্তস্রোত বয়ে যায় পাতুয়ার।

"হ্যাঁ, আমিই। পোস্টারে নাম দেখেছ বুঝি!" ফিক করে হেসে ওঠে মহুয়া।

"কিন্তু ঝড়ের জন্য তো আজ আর হবে না কিছু। তা তোমার টুকরিতে কী আছে গো?"

"রাম, সীতা, হনুমান! তোমার চাই?"

"পাখি আছে, পাখি?" বড় বড় চোখ করে তাকায় মহুয়া।

(c) হারীত কৃষ্ণ দেবের জন্ম শোভাবাজারের সুপরিচিত দেব পরিবারে, ১৮৯৪ সালের মার্চ মাসে। প্রচারবিমুখ এই মানুষটি চিরদিন সাধারণ মানুষের চোখের আড়ালেই রয়ে গেছেন। প্রাচীন

ইতিহাস বিষয়ক বিভিন্ন গবেষণার মধ্যে তিনি আজীবন নিজেকে যুক্ত রেখেছিলেন। তাঁর সমসাময়িক ইতিহাসবিদরা এবং তৎকালীন সমাজের বুদ্ধিজীবী মানুষরা কিন্তু হারীত কৃষ্ণর কাজ সম্পর্কে ওয়াকিবহাল ছিলেন। এশিয়াটিক সোসাইটির জার্নালে তাঁর বিভিন্ন প্রবন্ধ নিয়মিত প্রকাশিত হত। ১৯১৭ সালে তিনি এশিয়াটিক সোসাইটির সদস্য পদও লাভ করেন। ইংল্যান্ড, জার্মানির বিভিন্ন পত্রপত্রিকাতে তাঁর ঐতিহাসিক গবেষণামূলক রচনাগুলি মান্যতা পেয়েছিল।

প্রেসিডেন্সি কলেজ থেকে ইংরাজিতে এমএ পাশ করেন তিনি, ফ্রেঞ্চ শেখার জন্য ভর্তি হয়েছিলেন, আবার রবীন্দ্রজামাতা বিশিষ্ট ব্যারিস্টার প্রমথ চৌধুরীর কাছ থেকে বাংলায় আইনের পাঠ নেওয়ার আগ্রহে ল কলেজেও ভর্তি হন। তিনি ছিলেন প্রকৃতই জ্ঞানপিপাসু। ঠাকুরদা উপেন্দ্র কৃষ্ণ দেবের (যাকে হরিদাসের গুপ্তকথার জনক বলে মনে করা হয়) কাছ থেকে তিনি ছোটবেলায় নানা রকম ইতিহাস, পুরাণের কাহিনি শুনতেন এবং আকৃষ্ট বোধ করতেন। তাঁর পিতা অসীম কৃষ্ণেরও ছিল ইতিহাস প্রীতি। বাড়িতে তাঁর নিজস্ব লাইব্রেরি ছিল। বাড়িতে জ্ঞানীগুণী মানুষের নিত্য আনাগোনা লেগেই থাকত। এরকম এক সাংস্কৃতিক পরিমণ্ডলে বেড়ে ওঠার কারণেই হয়তো ছোট বয়স থেকে হারীত কৃষ্ণের মধ্যে বিবিধ বিষয়ের প্রতি এক সহজাত কৌতূহল তৈরি হয়। প্রমথ চৌধুরীর সান্নিধ্যে আসার খুব অল্পদিনের মধ্যেই হারীত তাঁর প্রিয়পাত্র হয়ে ওঠেন। সহজ বাংলা ভাষায় সাহিত্য রচনার জন্য প্রমথ চৌধুরী যখন সবুজ দল গঠন করেন, হারীত কৃষ্ণ ছিলেন সেই দলের অন্যতম সভ্য। তাঁকে লেখা প্রমথ চৌধুরীর প্রায় শখানেক চিঠি নিয়ে হারীত কৃষ্ণের রচনা 'সবুজ পাতার ডাক' দেশ পত্রিকায় পঁয়ত্রিশটি কিস্তিতে প্রকাশিত ((১৯৫৯ সালের ৮ এপ্রিল থেকে ১২ ডিসেম্বর) হয়েছিল, রচনাটির জনপ্রিয়তা ছিল সাংঘাতিক। মূলত প্রমথ চৌধুরীর উৎসাহেই তিনি বাংলা ভাষায় লিখতে শুরু করেন। তাঁর অসামান্য রসবোধ, বিভিন্ন বিষয়ে গভীর জ্ঞান, ভাষার নৈপুণ্য তাঁকে লেখক হিসেবে প্রতিষ্ঠিত করে। শ্রীযুক্ত পরিমল গোস্বামী তাঁর স্মৃতিচারণায় হারীত কৃষ্ণের আলাপচারি রচনায় দক্ষতার ভূয়সী প্রশংসা করেছেন। অবিবাহিত মানুষটি জ্ঞানান্বেষণেই তাঁর জীবন অতিবাহিত করেছিলেন কিন্তু প্রকৃত জ্ঞানীর মতোই নিজের বিদ্যা শিক্ষা বা বংশমর্যাদা— কোনওকিছু নিয়েই তাঁর কোনও অহমিকা ছিল না। তাঁর সহজ সরল শিশুকে স্বভাবের জন্যে তিনি ছিলেন সকলের প্রিয়পাত্র।

তাঁর তারকা সন্নিবিষ্ট বন্ধুমহলে বিজ্ঞানী সত্যেন্দ্রনাথ বসু ছিলেন সবচেয়ে অন্তরঙ্গ। হারীত কৃষ্ণের হাত ধরেই সবুজ সভায় সত্যেন্দ্রনাথের প্রবেশ ঘটে। ১৯১৮ সালের ১ জানুয়ারি সবুজ দলের সভা বসেছিল শোভাবাজার রাজবাড়িতে, সেদিন ছিল সত্যেন বোসের জন্মদিন। সেখানে উপস্থিত রসরাজ অমৃতলাল বসু হারীতকে একান্তে জিজ্ঞেস করলেন, 'What is Satyen Bose to You?' হারীতের উত্তর ছিল— 'I place him next to my father!' একথা প্রকাশিত হয় জ্ঞান ও বিজ্ঞান মাসিকের ১৯৬৪ সালের জানুয়ারি সংখ্যায়, লেখাটির নাম ছিল 'সত্যেন বোস আমার কে?' এরকম একজন মানুষ, যাঁর নিত্য ওঠাবসা ছিল সমাজের সেরা বুদ্ধিজীবী মানুষদের সঙ্গে, সেই তিনিই ছিলেন একেবারে ঘরোয়া, মজার মানুষ। গৌরবর্ণ, তীক্ষ্ণ নাসার শীর্ণ চেহারার মাঝারি উচ্চতার মানুষটির রসবোধের তুলনা ছিল না। বাড়ির ঠিকানা জানতে চাইলে বুড়ো আঙুল দেখিয়ে 'এইটে (ঠিকানা ছিল ইং ৮এ) রাজার রাস্তা' (অর্থাৎ নবকৃষ্ণ স্ট্রীট) বলাটা ছিল তাঁর পরিচিত উত্তর। ঘরে-বাইরে ছোট-বড় সকলের কাছেই তিনি ছিলেন হারীতদা। এমনকী ভাইপো-ভাইঝিরাও তাঁকে হারীতদা বলেই সম্বোধন করতেন। নিজে ভাল গান তো গাইতেনই, সেই সঙ্গে বাজাতে পারতেন অর্গান, পিয়ানো। ভারতীয় এবং পাশ্চাত্য ধ্রুপদী সংগীতে তাঁর অনুরাগ ছিল। সংগীতের সমঝদার হিসেবেও তাঁর কদর ছিল। নিজের বাড়িতেই বন্ধুবান্ধবদের নিয়ে গান-বাজনাসহ আড্ডা জমে উঠেছে বহুবার, বন্ধুবর সত্যেন্দ্রনাথ এস্রাজ

বাজাতেন আর হারীত গাইতেন। বিখ্যাত কবি, সঙ্গীতজ্ঞ দিলীপ রায়ের কাছ থেকে শেখা একটি রাশিয়ান গান তাঁর গলায় শুনতে সত্যেন্দ্রনাথ বড় ভালবাসতেন এবং বারবার শুনতে চাইতেন। ওই গানটির আদলে পরে দিলীপ রায় একটি বাংলা গান রচনা করেন, সেটি হল— 'অকূলে সদাই চল রে ভাই চলে যাই'। এই আড্ডায় মাঝেমধ্যে উপস্থিত থাকতেন রমেশচন্দ্র মজুমদার, প্রশান্তচন্দ্র মহলানবিশ, ধূর্জটিপ্রসাদ মুখোপাধ্যায়, সুনীতি কুমার চট্টোপাধ্যায় সহ হারীতের ঘনিষ্ঠ বন্ধুর দল। মাঝে-মাঝে বাড়ির কুচোকাঁচাদের জুটিয়ে নিয়েও তিনি পিয়ানো বাজিয়ে শুরু করে দিতেন গান। রবীন্দ্রনাথের গান তো ছিলই, তার সঙ্গে গিরিশ ঘোষের নাটকের গানগুলি গাইতেও তিনি বড় ভালবাসতেন। প্রমথ চৌধুরীর সূত্রে রবীন্দ্রনাথের সঙ্গে তাঁর ব্যক্তিগত পরিচয় ছিল। ভাইপোদের কাছে তাঁর শান্তিনিকেতনে রবীন্দ্রনাথের সঙ্গে দেখা হওয়ার গল্প যেটি বলেছিলেন তা এইরকম— সবুজ দলের সঙ্গে শান্তিনিকেতন পৌঁছে, পরদিন সাক্ষাৎ করতে গেলে কবিগুরু বললেন— 'ওহ! হারীত কখন এলে? রাতে ভাল ঘুম হয়েছিল তো?' হারীত— 'আজ্ঞে শিশু ভবনে যতটা ঘুমোনো সম্ভব ততটা হয়েছে।' (শিশু ভবনকে শিশু ভবন বলার অর্থ সেখানে ছারপোকার প্রকোপ বেশি) রবীন্দ্রনাথ ইঙ্গিতটি ধরে নিয়েছিলেন এবং সেক্রেটারিকে বলে দিয়েছিলেন সেদিন থেকে তাঁদের অন্য কোথাও থাকার ব্যবস্থা করতে।

৪- **निम्नलिखित हिंदी गद्यांश का बांग्ला में अनुवाद कीजिए।** **10**

बाईसवें प्रकरण में हमें अपनी भीतरी मुसीबतों की थोड़ी कल्पना हुई थी। जोहानिसबर्ग में मुझ पर पठानों का हमला हुआ उस समय मेरा परिवार फिनिक्स में रहता था। हमले के कारण' मेरी पत्नी और बच्चों के मन में चिंता होना स्वाभाविक था। मुझे देखने के लिए पैसे खर्च करके फिनिक्स से जोहानिसबर्ग तक दौड़ आना उनके लिए संभव नहीं था। इसलिए अच्छा होने के बाद मेरा ही उनके पास जाना जरूरी था।

कामकाज के सिलसिले में नेटाल और ट्रान्सवाल के बीच मेरा आना-जाना होता ही रहता था। यह बात मेरी जानकारी से बाहर नहीं थी कि नेटाल में भी सरकार के साथ हुए कौम के समझौते के बारे में भारी गलतफहमी फैली हुई थी। मुझे और दूसरों को जो पत्र नेटाल से लिखे जाते थे, उनसे मुझे इसका पता चलता था। और 'इंडियन ओपीनियन' के नाम तीखे व्यंग्य से भरे हुए जो पत्र भेजे जाते थे, उनका ढेर भी मेरे पास था ही। यद्यपि अभी तक सत्याग्रह की लड़ाई ट्रान्सवाल के हिंदुस्तानियों तक ही सीमित थी, फिर भी नेटाल के हिंदुस्तानियों की सम्मति प्राप्त करना और उनकी भावनाओं का खयाल रखना जरूरी था। ट्रान्सवाल के हिंदुस्तानी ट्रान्सवाल के निमित्त में समस्त दक्षिण अफ्रीका के हिंदुस्तानियों की लड़ाई लड़ रहे थे। अतः नेटाल में फैली हुई गलतफहमी को दूर करने के लिए भी डरबन जाना मेरे लिए आवश्यक था। इसलिए पहले ही मौके से लाभ उठाकर मैं वहाँ पहुँच गया।

डरबन में हिंदुस्तानियों की एक सार्वजनिक सभा बुलाई गई। कुछ मित्रों ने पहले से मुझे बता दिया था कि इस सभा में मुझ पर आक्रमण होनेवाला है; इसलिए या तो मैं इस सभा में उपस्थित ही न रहूँ या अपनी रक्षा के कुछ उपाय करूँ। लेकिन दोनों में से एक भी मार्ग मेरे लिए खुला नहीं था। सेवक को उसका स्वामी बुलाए और सेवक डर के मारे न जाए, तो उसका

सेवाधर्म भंग हो जाता है। और जो सेवक स्वामी की सेवा से डरे, वह सेवक कैसा? सेवा के खातिर जनता की सेवा करना तो तलवार की धार पर चलने जैसा है। यदि जनसेवक प्रशंसा को स्वीकार करने के लिए तैयार हो, तो निंदा से वह कैसे भाग सकता है? इसलिए मैं निश्चित समय पर सभा में उपस्थित हो गया। वहाँ लोगों को मैंने समझाया कि सरकार के साथ समझौता कैसे हुआ। उनके प्रश्नों के उत्तर भी मैंने दिए।

बांग्ला-हिंदी के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद (एमटीटी-003)

कार्यक्रम कोड: पीजीसीबीएचटी

पाठ्यक्रम कोड: एमटीटी-003

पूर्णांक: 100

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 10

1. विज्ञापनों और समाचारों का बांग्ला से हिंदी में अनुवाद करते समय किस प्रकार की सावधानियां बरतनी पड़ती हैं? उदाहरण सहित समझाइए।

अथवा

अनुवाद करते समय जब एक शब्द के कई अर्थ होते हैं, तब उनसे होने वाली भूलों से बचने के लिए किस प्रकार बचना पड़ता है? सोदाहरण प्रकाश डालिए।

2. निम्नलिखित शब्दों के बांग्ला और हिंदी पर्याय लिखते हुए इनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए। 10

आयु	व्यर्थ	अतिरिक्त	व्यापक	तटस्थ
अभ्यास	अनुभव	घर	स्रोत	संपर्क

3. निम्नलिखित अंशों के हिंदी में अनुवाद कीजिए। 5x2=10

(क)

পূর্ণিমা কিনেছি আমি, এই দ্যাখো—

জ্যোৎস্নাভরা বাজারের থলি

ডালফোঁপরা, আখ আর আতা ও শশার ফাঁকে ফাঁকে

ভেজালো কিশমিশের মতো ফুলে-ওঠা চাঁদ সদাগর

রাস্তার পূর্ণিমাজলে কাগজনৌকায় ভেসে যায়!

সূর্যপক্ক দিনের প্রান্তরে আঁধারের নমিত তূণীরে
অঙ্গার প্রগাঢ় পিরামিড শতসম্ভবে উড্ডীন

নিজস্ব উলুখাগড়াজ্যে আমি একা, বসে বসে ভাবি
আমিও ফুলের গর্ভে চলে যাব অতিদক্ষ কীটাণুর মতো
সেখানে জলকপাট খুলে বেরিয়ে এসে
লক্কা পায়রার মতো পুচ্ছ মেলে উড়ে যাবে রেণু ও রন্ধন

(খ)

এক আবহাওয়াবিদকে কে যেন জিজ্ঞেস করল,
'বৃষ্টির জলে কত ভাগ চোখের জল থাকে?'
আবহাওয়াবিদ ঘাড় চুলকে তাকালেন এক
ইতিহাসবিদের দিকে। ইতিহাসবিদ এপাশ-ওপাশ
খুঁজে গিরিশবাবুর দিকে তাকাতেই, উনি ন্যাশনাল
থিয়েটারের উইং-এর পাশ থেকে চোখ রাখলেন
বিনোদিনী আর গোলাপসুন্দরীদের চোখে, যারা সত্যি
সত্যিই ঘর বাঁধতে চেয়েছিল, কিন্তু পারেনি কোনওদিন।
অঝোর বৃষ্টি নামল। সেই ধারায় ভিজতে ভিজতে
গিরিশবাবু আর ইতিহাসবিদ বিডন স্ট্রিট ধরে হাঁটতে
লাগলেন মিনার্ভার উদ্দেশে। আবহাওয়াবিদ চোখ
রাখলেন বৃষ্টিমাপক যন্ত্রের দিকে। রাতের শেষ ট্রাম

ভাঙা স্বপ্ন নিয়ে রওনা দিল রোজকার মতন।

4. निम्नलिखित अंशों का हिंदी अनुवाद कीजिए। 10X7=70

(A)

ঝড় আসছে, সামান তুলে নে রে পাতুয়া! আজ আর মেলা হবে না। ফলের টুকরি গোছাতে-গোছাতে আকবর আলি পাতুয়াকে তাড়া লাগাল। কিন্তু আজ তো যাত্রা পালা আছে চাচা, মহুয়ার নাচ আছে। অনেক লোক হবে। তুমি দেখবে না?

আরে ওসব আজ আর হবে না রে পাতুয়া—খবরে বলেছে, জোর বারিশ আসছে, ঝড় বইবে ইদিকে, সাইক্লোন। তুই জলদি সামান তুলে বাড়ি যা।

দুপুর গড়িয়ে বিকেল হয়েছে। দোকানিরা মেলায় সবে দোকান সাজাতে শুরু করেছে। রহিম মোল্লার ঘাগরার দোকান। লাল মসলিনের ওপর নীল-হলুদ সুতোয় ফুল, প্রজাপতি। কমলার ওপর সবুজ-হলুদের পাখি। আরও নানা রঙের ছোট মেয়েদের ঘাগরা। পুঁতির মালা, কানের দুল সাজাচ্ছে মানিক তার দোকানে। টিয়া পাখির খাঁচায় ছোলা দিচ্ছে সোনাই। মেলা শুরু হলেই লোক জড়ো হবে। তখন সোনাইয়ের টিয়া কার্ড তুলে-তুলে ভাগ্য বাতলে দেবে সবার। বাঁশিওয়ালা ফুঁ দিচ্ছে তার বাঁশিতে। গোলাপি, সাদা বেলুন নিয়ে হাজির বেলুনওয়ালা। করিমের দোকানে লোহার কড়াইতে জিলিপি ভাজার তেল গরম হচ্ছে। এমন সময় আকবর আলির কথায় সব যেন থমকে যায়—তবে আজ আর বিক্রি-বাটা হবে না! মেলার এই কটা দিনই তো একটু বেশি রোজগার হয় ওদের। সংসারে দুটো পয়সা বেশি আসে। ছেলে-মেয়েরা আনন্দ করে। বছরের বাকি দিনগুলো তো সেই আবার দিন আনা, দিন খাওয়া। কেউ ধান জমিতে লাঙল দেয়, কেউ বা মিস্তিরির কাজ করে।

মাইকে ঘোষণা হল—সাইক্লোন আসছে। দোকান তুলে নাও।

তাঁবুর বাইরে বসে হাঁটুতে মুখ গুঁজে মহুয়া কাঁদছে। তার পরনে নীল চোলি আর ঘাগরা। মুখে চড়া রঙ। মহুয়ার বুড়ো বাপ তখন যাত্রার ম্যানেজারের কাছে হাতজোড় করে পয়সা ভিক্ষা চাইছে—"এত দূর থেকে এলাম বাবু, কয়েকটা টাকা দেন, বাড়িতে বড় অভাব।"

ম্যানেজার খেঁকিয়ে ওঠে—"পয়সা কিসের? একটাও টিকিট বেচতে পারলাম না আর উনি পয়সার স্বপ্ন দেখছেন! যদি আবার মেলা বসে, মেয়েকে নিয়ে এসো, যাত্রায় নাচবে, পয়সাও পাবে।"

মহুয়ার কানে তার বাবা আর ম্যানেজারের কথা ভেসে আসে। এক সপ্তাহ ধরে মায়ের জ্বর। ডাক্তারবাবু শহরে নিয়ে যেতে বলেছে। ছোট বোন টিয়াকে মায়ের কাছে রেখে সে আর তার বাবা পাশের গ্রাম থেকে অনেক পথ হেঁটে এসেছে। সারাদিন কিছু পেটে পড়েনি তার। খিদেয় পেট ব্যথা করছে।

(B)

সাইকেলের রডে একটা ছেঁড়া তোয়ালে বড় আদরে পেঁচিয়ে বাঁধা। যাতে তার ছোট্ট মেয়েটির ব্যথা না লাগে। এবড়োখেবড়ো রাস্তায় গ্রামের পথ ধরে আজ ছুটির দিনে বাপ-বেটির অভিযান। সঙ্গে একটি দামি ক্যামেরা। ছুটিছাটা মানেই একটা দুপুর, একটা বিকেল, গড়িয়ে আসা সূর্য পিঠে নিয়ে তাদের বাড়ি ফেরা।

"বাবা, ওটা কী পাখি? পাখিটা কি শুধু ওই গাছেই থাকে? ওদের বাড়ি কোথায়?"

এরকম হাজারো প্রশ্নের জবাব দিতে দিতে পথ চলা। যে-প্রশ্নের উত্তর মেলে না, সামনে ঝুঁকে পড়ে তার দিকে ঘাড় ঘুরিয়ে থাকা মেয়েটার কপালে গাল রেখে একটু উষ্ণতা নেওয়া।

সময় গড়িয়েছে অনেক। পিঠে রোদ নিয়ে বাড়ি ফেরার দিনগুলো কবেই ফিকে হয়ে গেছে। কিশোরীর চাপল্য থেকে তরুণীর পূর্ণতায় বোধ, দৃষ্টি সবই পালটে যায়। পালটায় না কেবল তার বাবা।

আসলে পরিবার ও ব্যক্তি কেউই বিচ্ছিন্ন নয়। কিন্তু অভিন্নই-বা কতটুকু? এই ভিন্নতা সবার চোখে সমান নয়। ফলে আপাত বাউন্ডুলে যে-বাবা তার প্রাণের মানুষ, সেই বাবাও তার চোখে বদলে যেতে থাকে।

ঘর-ছাড়া মানুষটি আবার ঘর বাঁধে নাকি! সে মানুষ যখন ক্লান্তির কবলে পড়ে তখন কোনও দাওয়ায় বসে পড়ে। কেউ-বা হয়তো চাটাই, শীতলপাটি পেতে দিলে দু'-দণ্ড বেশি থাকা হয়ে যায়। পথিকের কেবল পথই সম্বল, পথের পাশে আবাসে কোনও আবাদি ফসল ফলাতে পারে না। তাই কোনও খেত নেই, কোনও জমি নেই ফসল ফলানোর।

অভিমানে বুক ফাটে মেয়ের। রুখে দাঁড়ায়। প্রতিবাদ করে। ঘরে এসে জল চেয়ে পায় না মানুষটা। ভরা ঘরের খাঁ-খাঁ শূন্যতা নিয়েই থেকে যায় সে।

"এ পাখিটা দেখেছিস?"

মানুষটা ছবি তোলে পাখির, ছবি তোলে গাছের, ছবি তোলে সূর্যের।

(C)

আমি দইয়ের হাঁড়ি পায়ের কাছে রেখে আমার পড়ার অভিনয়, পরিয়াডিক চোরাগোপ্তা চাউনি নিক্ষেপ করায় আর জানালা দিয়ে দ্রুত অপসৃয়মান দৃশ্যাবলি দেখায় ফিরে গেলাম।

কখন দুঘন্টা কেটে গেছে, বাস ফরিদপুর ছেড়ে দৌলতদিয়ার কাছাকাছি হবে তখন, পেছন দিক থেকে একটা মৃদু শোরগোল উঠল। ঘুরে তাকিয়ে একটু বোঝার চেষ্টা করলাম, দেখলাম দু একজন উঠে দাঁড়িয়ে কী সব দেখার চেষ্টা করছে সিটের নীচে, ভাবলাম কেউ কিছু হারিয়েছে হয়তো, পাত্তা না দিয়ে আবার নিজের জগতে ফিরে গেলাম। এই সুযোগে লক্ষ্য করলাম সেও ঘাড় ঘুরিয়ে একঝলক দেখে নিল চারপাশটা। একটু পরে আবার শোরগোল, এবার বেশ প্রকট এবং প্রায় সারা বাস জুড়ে। একসঙ্গে অনেকজন মিলে, বেশির ভাগই মহিলা, গলা উঁচিয়ে বলছে "দইয়ের হাঁড়ি কার, কোন স্টুপিডের, কোন বদমাশ অসভ্য ..." ইত্যাদি। সবার তীব্র রোষের কারণটা বোঝা গেল কিছুক্ষণের মধ্যেই। মহিলাদের শাড়ি আর জুতো দইয়ে মাখামাখি— আইলের শেষপ্রান্তে দুটো ভাঙা দইয়ের হাঁড়ি! বুঝে গেলাম মুহূর্তে কী হয়েছে, নিজের পায়ের কাছে তাকালাম, না নেই! কখন গড়িয়ে গেছে! আমি উঠে দাঁড়িয়ে হাত তুলে কিছু বলতে যাচ্ছিলাম, তখন মেয়েটা তাকাল আমার দিকে— সরাসরি, অনাড়ষ্ট! কী ছিল সেই চোখে? নির্ভেজাল মজা, অনাবিল কৌতুক নাকি অন্যকিছু? আমি আবিষ্ট, মন্ত্রমুগ্ধ। ষড়যন্ত্রসংকুল গলায় মৃদুস্বরে, কিন্তু স্পষ্ট করে সে বলল, "কেউ দেখেনি কিন্তু।" অর্থাৎ খামোখা বলার কী দরকার, না বললেও তো চলে। নিমেষে দই হারানোর ক্ষতি এবং আশু অপদস্থ হবার সম্ভাবনা— সব অগ্রাহ্য হয়ে গেল আমার কাছে। বাস থেমেছিল ঠিক তখনই পদ্মার পারে। সেই কোলাহলপূর্ণ বাস, সেই ব্যস্তসমস্ত ফেরিঘাট, সেই বিশাল পদ্মা— সবকিছুর মাঝখানে আমি, ইঞ্জিনিয়ারিং ইউনিভার্সিটির থার্ড ইয়ারের ছাত্র আমি, সেদিন এক অদ্ভুত প্রাণা নিয়ে বাস থেকে নেমে ফেরির দিকে হাঁটতে শুরু করেছিলাম।

(D)

ভদ্রলোকের মনে পড়ে যায়, তাঁর নিজের ছেলেবেলায় ঠিক এমনভাবেই বিছানার পাশে কত নির্জন রাতে বাজত একই গান। সন্তানের খাটের পাশে এসে বসলেন তিনি, জিজ্ঞেস করলেন, কেমন লাগছে? অন্ধকার থেকে শিশুর সারল্যে শোনা গেল উত্তর— 'এপিক'।

যাঁর গান আধুনিক সময়ের এক কিশোরের কাছেও পেল 'এপিক' তকমা, সম্প্রতি তিনি রয়েছেন ঔৎসুক্য, আগ্রহ ও চর্চার কেন্দ্রে। বব ডিলান। ২০১৬ সালে সাহিত্যে নোবেল পুরস্কার প্রাপক হিসেবে তাঁর নামটি ঘোষণা হওয়া মাত্রই আপামর, অর্থাৎ ভক্ত ও অ-ভক্ত, আগ্রহী ও অনাগ্রহী মানুষের বিতর্ক-উন্মাদনার বিষয় হয়ে উঠেছেন তিনি।

বব ডিলান কি সাহিত্যিক? তা যদি নয়, তবে নোবেল কেন? কবিও কি? নাকি প্রধানত সংগীত রচয়িতা এবং গায়ক? নানাবিধ প্রশ্ন, উত্তরদাতাও বহুধাবিভক্ত। তবু, সবশেষে, ডিলানকে অস্বীকার করছেন না কেউই। কিন্তু যে-ঘরানা থেকে তাঁর উত্থান, যে-ধারার সংগীতে তাঁর বেড়ে ওঠা, সেই স্রোতে বা উজানে কি তিনিই একা? ডিলানই শ্রেষ্ঠতম? এই অনতি-উদাস সময়েই প্রশ্নগুলো ওঠা বোধহয় জরুরি। 'এপিক'-এর চোখধাঁধানো আলোয়, অন্য যেসব 'কাব্য' কিছুটা হলেও থেকে গিয়েছে কিঞ্চিৎ অন্ধকারে, এবং এমনকী সাহায্যও করেছে মহাকাব্যটি গড়ে তুলতে, সেই ঝোপঝাড়ে ঢেকে যাওয়া পথটি খুঁজে দেখার ইচ্ছে থেকে এই লেখাটির জন্ম।

এমন তিনজনকে বেছে নেওয়া হয়েছে— পরিসরের স্বল্পতা মেনে নিয়ে— যাঁদের নামটুকুও আজ, অন্তত আমাদের কাছে, বিস্মৃতপ্রায়। তারতে, এই বঙ্গেও, বব ডিলান, এলভিস প্রেসলি, জন লেনন, জিম মরিসন, পল সাইমন, মিক জ্যাগার বা জিমি হেনড্রিক্স, এরিক ক্ল্যাপটন, জোন বায়েজ, রজার ওয়াটার্স, জিমি পেজ এমন আরও অনেক সংগীতশিল্পীই অপরিচিত নন। এই তালিকায় ওই বিস্মৃতপ্রায় শিল্পীদেরও থাকা উচিত, সে কথা ফিরে ফিরে বলতে চাই। এপিকের পাশাপাশি গীতিকবিতাকেও কি আমরা মনে রাখিনি?

(E)

এই চক্রান্ত শুরু হয়েছিল ১৯৪৭ সালের ডিসেম্বর মাসে। সাভারকর যে পরিকল্পনার মূল নায়ক, তা প্রকাশ পায় রাজসাক্ষী দিগম্বর বাগডের বয়ানের মধ্য দিয়ে। সেই বয়ান অনুযায়ী, ১৯৪৮ সালের ১৪ ও ১৭ ডিসেম্বর গডসে ও আপ্টে সাভারকরের সঙ্গে দেখা করেন। ১৭ তারিখের সাক্ষাৎকারের পর সাভারকর স্বয়ং তাঁদের বিদায় জানান বাড়ির ফটকে এসে। বলেন, 'যশস্বী হয়ে ফিরে এসো'। কিন্তু অভিযোগকারী সরকার পক্ষ (তদানীন্তন বোম্বাই প্রদেশের 'প্রাইম মিনিস্টার' ছিলেন মোরারজি দেশাই) বাগডের সাক্ষ্যকে সমর্থন করার মতো কোনও অতিরিক্ত সাক্ষ্য বা প্রমাণ জোগাড় করতে ব্যর্থ হন। ফলে সাভারকরের বিরুদ্ধে অভিযোগ টেকেনি।

এই ব্যর্থতা রহস্যময়। ১৯৬৬ সালে সাভারকরের মৃত্যুর পর তাঁর সঙ্গে গডসের ঘনিষ্ঠ সম্পর্কের নানা প্রমাণ উঠে আসতে শুরু করে, জলের উপর ভেসে ওঠা বুদবুদের মতো। নাথুরাম গডসের ভ্রাতা গোপাল গডসের বই 'গাঁধীহত্যা এবং আমি' প্রকাশিত হয় ১৯৬৭ সালে। জানা যায়, ১৯২৯ সালে নাথুরাম যখন কিশোর তখন থেকেই তাঁর সাভারকরের কাছে যাতায়াত। তখন ব্রিটিশ সরকারের কাছে মুচলেকা দিয়ে সাভারকর আন্দামান জেল থেকে ফিরে এসেছেন মহারাষ্ট্রের রত্নগিরিতে। সরকারি আদেশ অনুযায়ী তাঁর

গতিবিধি রত্নগিরি জেলাতেই সীমাবদ্ধ। গোপাল গডসে লিখেছেন, তখন চাকরিসূত্রে তাঁদের পিতা সপরিবার রত্নগিরিতেই বাস করতেন। নাথুরাম ইতিমধ্যে আরএসএস-এ যোগ দিয়েছেন। সাভারকরের ব্যক্তিত্ব তাঁকে তীব্রভাবে আকৃষ্ট করে। তিরিশ দশকে সাভারকরের হিন্দুত্ববাদী দর্শন তাঁকে ব্রিটিশ চক্ষুতে কংগ্রেসের প্রতিপক্ষ হিসেবে প্রতিষ্ঠিত করে, প্রত্যাহৃত হয় তাঁর গতিবিধির উপর বাধানিষেধ। তারপর থেকে সাভারকর যেখানেই যেতেন, নাথুরাম গডসে থাকতেন তাঁর নিত্যসঙ্গী। সেসব কথা বেমালুম চেপে গিয়ে গাঁধীহত্যা মামলা বিচার চলাকালীন সাভারকর আদালতকে জানিয়েছিলেন যে, নাথুরামের সঙ্গে তাঁর পরিচয় casual, অর্থাৎ একান্তই অনিয়মিত।

অতঃপর, ১৯৬৯ সালে ইন্দিরা গাঁধীর প্রধানমন্ত্রিত্বকালে সুপ্রিম কোর্টের বিচারপতি জীবন লাল কপুরের অধীনে একটি কমিশন গঠিত হয় গাঁধীহত্যা সংক্রান্ত বৃহত্তর চক্রান্তটির পূর্ণাঙ্গ তদন্তের জন্য। সেই কমিশনের কাছে সাভারকরের সঙ্গে যুগপৎ গডসে ও আপ্টের নিবিড় সম্পর্কের অনেক তথ্য উঠে আসে প্রথমোক্তের নিজস্ব কর্মচারীদের সাক্ষ্য থেকেই। তাঁদের মধ্যে আছেন সাভারকরের দেহরক্ষী আপ্পা রামচন্দ্র কাসার। আছেন সাভারকরের সচিব গজানন বিষ্ণু দামলে। এঁরা সবাই ১৯৪৮ সালের গাঁধীহত্যা মামলা চলাকালীন সাক্ষ্য দিয়ে তাঁদের কর্তার সঙ্গে গডসে ও আপ্টের নিবিড় যোগাযোগের কথা বলেছিলেন। কিন্তু কোনও অজ্ঞাত কারণে আদালতে শপথসহ এঁদের বয়ান লিপিবদ্ধ করা হয়নি। যদি তা হত তবে সাভারকর সম্ভবত বেকসুর খালাস পেতেন না। তা ছাড়া সাভারকরের ক্ষমতা ছিল তাঁর কাছে দীক্ষিত শিষ্যদের মন প্রভাবিত করার, যাতে তাঁরা বেফাঁস কথা না বলেন। গডসে বা আপ্টে জেরার মুখে একবারও বলেননি তাঁদের সঙ্গে সাভারকারের যোগাযোগের কথা। সাভারকরের এই ক্ষমতা আগেও প্রমাণিত হয়েছে। বিশেষ করে লন্ডনে ভারতসচিবের রাজনৈতিক সেক্রেটারি স্যার কার্জন ওয়াইলিকে হত্যা করার দায়ে ভারতীয় যুবক মদনলাল ধিংরার বিচারকালে।

(F)

থাকার জায়গা বোরোলি হোটেল। আগে রেস্তোরাঁই ছিল। মাত্র দু'মাস হল থাকার জন্যে চারটি ঘর তৈরি হয়েছে। খাসা ব্যবস্থা।

সন্ধেবেলা আমার ভ্রাতৃপ্রতিম বন্ধু দীপ্তিময় হাজির মালবাজার থেকে। সে এখন মস্ত সরকারি আধিকারিক। কিন্তু গত কুড়ি বছরে তার শিশুসুলভ হইহই করা স্বভাব, জমিয়ে ফেলার অভ্যেস এতটুকু বদলায়নি। তুমুল গল্প চলল।

গিন্নি আর আমি দীপ্তিময়কে নিয়ে ঢুঁ মারলাম চারদিক খোলা রেস্তোরাঁতে। সামনে শিমুল গাছে পাতা নেই। কিন্তু লাল ফুলগুলোতে ধাক্কা খাচ্ছে তিস্তার হাওয়া। পুকুরের ওইপারে সোলার ব্যাটারির আলো জ্বলে উঠেছে অন্ধকার হতেই। খাবার চলে এল টেবিলে।

পোস্তর বড়া, আলু বেগুন বড়ি দিয়ে বোরোলির পাতলা ঝোল, শেষ পাতে টম্যাটো পেঁয়াজ দিয়ে ড্যাকরা (মাছ, গালি নয়)। তিস্তা থেকে সদ্য ধরা। গিন্নির নির্দেশে রান্না। কী যে অপূর্ব খেতে বলবার নয়।

বড্ডো মন ভাল হয়ে গেল। তাই রাতের দিকে দীপ্তিময়ের আনা গুড়ের রসগোল্লা খানকতক মেরে দিলাম। আরও খেতাম। গিন্নি বারণ করল।

কালকেও তিস্তার বুকেই কাটবে মোটামুটি।

উজান গো, উজান আজ। বেয়ে চলা, বয়ে চলা তিস্তাবুড়ির উজানে। তাই বুঝি আজ প্রাণের স্রোত, ঢলে আসা শরীরে ভাটা পড়া যৌবনের উচ্ছলতা।

ঠাকুর মালোর খাটনি আজ বেশি। স্রোতের উল্টোদিকে যাওয়া যে! কিন্তু কেন এই পরিশ্রম?

(G)

কোথাও বেড়াতে যাওয়ার আগে সে জায়গা সম্বন্ধে পড়াশোনা করা আমার ধাতে নেই। সবসময় আশঙ্কা, তাতে প্রথম দেখার বিস্ময়ে টান পড়বে। হ্যানয় বিমানবন্দর থেকে ভিয়েতনামের উত্তর-পূবে হালং বে-র দিকে আমাদের বাসটা যখন রওনা হল তখন শুধু এইটুকুই জানতাম যে, এটা একটা ইউনেস্কো ওয়ার্ল্ড হেরিটেজ সাইট আর আমরা দু'দিন ক্রুজে কাটাব।

সকাল সাড়ে ন'টা বাজে। ঝকঝকে রাস্তা দিয়ে আমাদের বাস ছুটে চলেছে। দু'ধারে সবুজ খেত। এখানকার গাছপালাদের আমি চিনি, নিম, নারকেল, কলা ইত্যাদি। হঠাৎ দেখলে মনে হয় নিজের দেশেই আছি।

ঘন্টা তিনেক বাদে পৌঁছলাম হালং বে-র জাহাজঘাটায়। একটা ফেরি নৌকা আমাদের জাহাজে নিয়ে গেল। জাহাজে উঠতেই ড্রাম বাজিয়ে, সরবত দিয়ে আমাদের ওয়েলকাম করা হল। তারপর আমরা চললাম নিজের নিজের ঘরের দিকে।

ঘরের দরজা খুলে ভিতরে ঢুকে সামনে তাকাতেই সামনের দৃশ্য দেখে খানিকক্ষণ চোখ সরাতে পারলাম না। ঘরের একদিকের দেয়াল পুরোটাই কাচের। সামনে দিগন্তবিস্তৃত সবুজ জলরাশি। জল থেকে মাঝে মাঝে মাথা তুলেছে ছোট ছোট টিলার মতো দ্বীপ। দ্বীপগুলোর নীচের দিকটা জল থেকে খাড়া দেওয়ালের মতো উঠে গেছে, তার গায়ের সাদা পাথরে কোনও গাছপালা নেই। আর মাথার দিকটা গোলাকৃতি, ঘন রেন ফরেস্টে ঢাকা। দূরের দ্বীপ সব আবছায়া নীল দেখাচ্ছে। আনুমানিক দেড় হাজার বর্গ কিলোমিটার বিস্তৃত হালং বে-তে প্রায় খোলোশো চুনাপাথরের দ্বীপ রয়েছে। বেশির ভাগ দ্বীপেই কোনও মানুষ বাস করে না।

— X —